

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 19: तीन पग भूमि

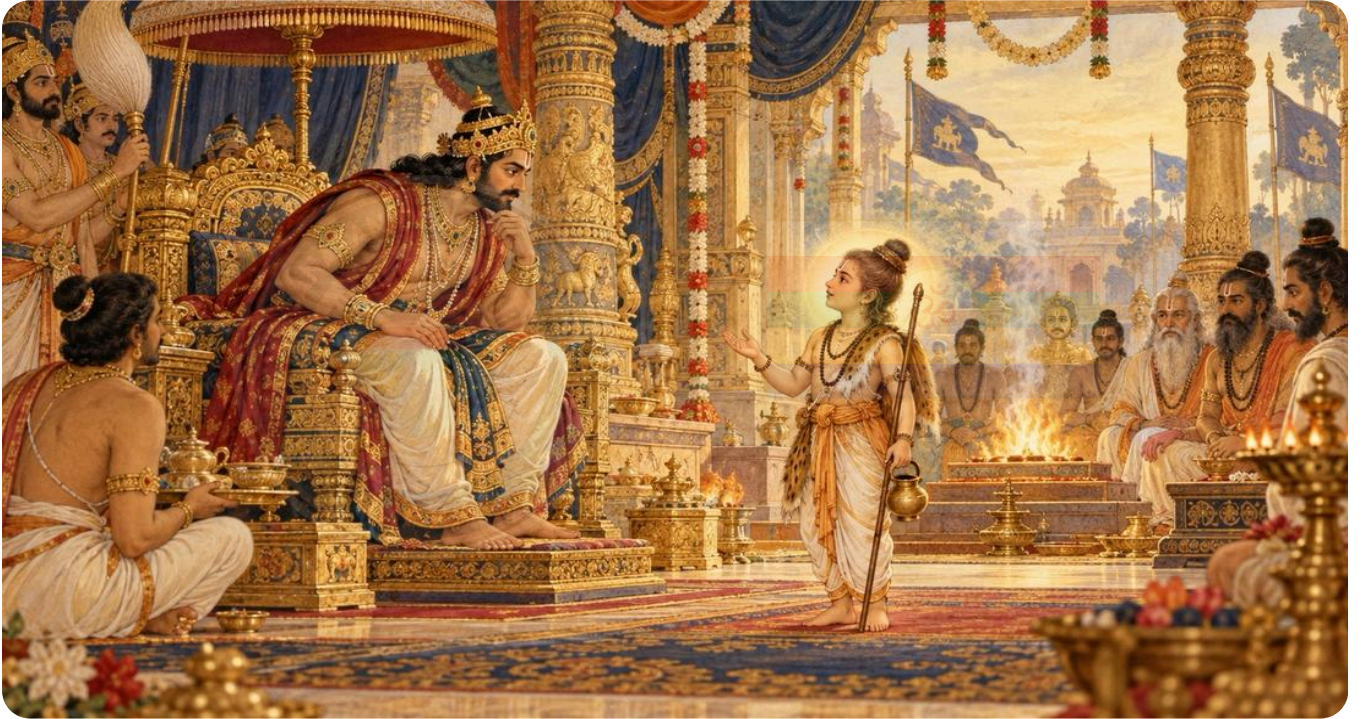
14 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



बलशाली बली के सिंहासन के समक्ष, वह छोटा ब्राह्मण बालक सबसे छोटा उपहार माँगता है — केवल तीन पग भूमि, उसके अपने डग से नार्पी हुई — और उस विनम्र याचना में तीनों लोकों का भाग्य चुपचाप निश्चित हो जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विङ्गडम् में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। इस उन्नीसवें अध्याय में, तीनों लोकों के स्वामी भगवान बली से लगभग कुछ भी नहीं माँगते, और अपने उत्तर में राजा को — और प्रत्येक श्रोता को — सन्तोष का सच्चा अर्थ सिखाते हैं, जबकि शुक्राचार्य चेताते हैं कि यह वचन उन्हें सब कुछ खो देगा।

अध्याय को जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 19 (उन्नीसवाँ अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान वामन बली से तीन पग भूमि माँगते हैं
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — भगवान वामन, बली और शुक्राचार्य के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: नर्मदा के उत्तरी तट पर भृगुकच्छ में बली की यज्ञभूमि
- केन्द्रीय विषय: भगवान वामन की तीन पग भूमि की याचना; उनकी सन्तोष-शिक्षा; बली का वचन; और शुक्राचार्य की चेतावनी
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 19, श्लोक 1-43
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अष्टादश अध्याय में भगवान अदिति से दिव्य वामन रूप में जन्मे, एक छोटे ब्राह्मण बालक का रूप धारण किया, समस्त देवताओं के उपहारों सहित यज्ञोपवीत ग्रहण किया, और नर्मदा पर भृगुकच्छ में बलशाली बली के अश्वमेध यज्ञ में चलकर गए। वहाँ बली ने उनका स्वागत किया, उनके चरण धोए, उनका पूजन किया, और उन्हें जो वे चाहें वह उदारता से अर्पित किया। यह अध्याय उस प्रस्ताव पर भगवान के उत्तर को उठाता है।

भगवान बली की वंश-श्रेष्ठता का सम्मान करते हैं

बली के धर्मयुक्त और सत्य वचनों से प्रसन्न होकर, भगवान ने उनके प्रस्ताव का स्वागत किया और बोलने लगे।

श्रीशुक उवाच

इति वैरोचनेर्वाक्यं धर्मयुक्तं स सूनृतम् ।

निशम्य भगवान्प्रीतः प्रतिनन्द्येदमब्रवीत् ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच इति वैरोचनेर्वाक्यं धर्मयुक्तं स सूनृतम् निशम्य भगवान्प्रीतः प्रतिनन्द्येदमब्रवीत्

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा — विरोचन-पुत्र बली के इस वचन को सुनकर — जो धर्मयुक्त, प्रिय और सत्य से पूर्ण था — भगवान प्रसन्न हुए, और उसका अभिनन्दन करते हुए इस प्रकार बोले। (स्कन्ध 8, अध्याय 19, श्लोक 1)

भगवान ने राजा के वचनों की उनके गौरवशाली वंश के योग्य कहकर प्रशंसा की। उन्होंने स्मरण कराया कि लौकिक विषयों में बली के मार्गदर्शक भृगु हैं, जबकि परलोक-सम्बन्धी धर्म में उनके गुरु उनके पितामह प्रह्लाद हैं, जो वंश में सबसे बड़े और वासनाओं से मुक्त हैं। इस वंश में, उन्होंने कहा, कभी कोई ऐसा नहीं हुआ जो द्वार पर आए ब्राह्मण को लौटा दे, अथवा वचन देकर कोई वस्तु न दे; न ही इसके राजाओं ने कभी दान माँगने वाले याचक अथवा युद्ध चाहने वाले योद्धा से मुख मोड़ा। इसी वंश में जन्मे हिरण्याक्ष, जो कभी अकेले ही गदा लिए पृथ्वी पर विचरते हुए अपना कोई प्रतिद्वन्द्वी न पा सके। तथापि जब विष्णु ने आगे चलकर पृथ्वी का उद्धार करते हुए इसी हिरण्याक्ष का वध किया, तब भी उन्होंने स्वयं को सचमुच विजयी नहीं माना, अपितु उस पराजित असुर के दुर्लभ पराक्रम का बार-बार स्मरण किया — क्योंकि भगवान शत्रु में भी वीरता का सम्मान करते हैं (श्लोक 6)।



देदीप्यमान ब्राह्मण बालक सिंहासनासीन बली के समक्ष खड़े होकर उनके वंश की श्रेष्ठता की प्रशंसा करते हैं — लौकिक विषयों में भृगु उनके मार्गदर्शक और आध्यात्मिक विषयों में साधु प्रह्लाद उनके गुरु (श्लोक 1-6)।

हिरण्यकशिपु की व्यर्थ खोज की कथा

यह दिखाने को कि इस जगत की शत्रुताएँ किस प्रकार शून्य में समाप्त होती हैं, भगवान ने एक प्राचीन कथा सुनाई। जब हिरण्याक्ष मारा गया, तो उसका बड़ा भाई हिरण्यकशिपु, क्रोध से जलता हुआ, अपने भाई के हन्ता को मारने के लिए भाला लिए हरि के धाम गया। उसे साक्षात् मृत्यु की भाँति निकट आते देख, भगवान — जो उचित अवसर के ज्ञाता हैं — ने सोचा कि यह शत्रु उनका वैसे ही पीछा करेगा जैसे मृत्यु प्रत्येक प्राणी के पगों का पीछा करती है। अतः भगवान ने अपने रूप को सूक्ष्म अवस्था में समेट लिया और, हिरण्यकशिपु के ही श्वास में छिपकर, उसकी नासिका से होकर उसके हृदय में प्रवेश कर गए। अपने ही महल को छानकर, और उसे विष्णु से रहित पाकर, हिरण्यकशिपु क्रोध से गरजा और उसने स्वर्ग, पृथ्वी, दिशाओं, आकाश, पातालों और सातों समुद्रों को खोज डाला — किन्तु कहीं भी उन भगवान को न पा सका जो उसके अपने शरीर में ही छिपे थे। अन्ततः, उन्हें न पाकर, उसने यह निष्कर्ष निकाला कि उसके भाई का हन्ता उस लोक को चला गया है जहाँ से कोई नहीं लौटता, और अपना पीछा छोड़ दिया।

भगवान ने कोमलता से शिक्षा दी: देहधारी जीवों की शत्रुता केवल मृत्यु तक ही टिकती है, और क्रोध, जो अज्ञान में जड़ जमाए और अहंकार से पोषित होता है, का कोई स्थायी आधार नहीं। उन्होंने बली को स्मरण कराया कि उनके अपने पिता विरोचन, जो ब्राह्मणों से इतने प्रेम करते थे, ने एक बार अपने प्राण तक देवताओं को दे दिए जब वे ब्राह्मणों के वेश में उनके पास आए — यद्यपि वे जानते थे कि वे वस्तुतः कौन हैं — और यह कि बली ने स्वयं अपने पूर्वजों के श्रेष्ठ आचरण का निष्ठापूर्वक पालन किया है।



भगवान बताते हैं कि किस प्रकार हिरण्यकशिपु, गदा और भाला लिए, विष्णु को खोजने स्वर्ग, पृथ्वी और सातों समुद्रों में भटका — यह न जानते हुए कि भगवान उसके अपने हृदय में ही छिपे थे, यह शिक्षा देते हुए कि सांसारिक शत्रुता शून्यता में समाप्त होती है (श्लोक 7-15)।

भगवान तीन पग भूमि माँगते हैं

तब आई भगवान की प्रसिद्ध याचना — नाप में छोटी, किन्तु अर्थ में विशाल।

तस्मात् त्वत्तो महीमीषद् वृणेऽहं वरदर्शभात् ।

पदानि त्रीणि दैत्येन्द्र सम्मितानि पदा मम ॥ १६ ॥

तस्मात् त्वत्तो महीमीषद् वृणेऽहं वरदर्शभात् पदानि त्रीणि दैत्येन्द्र सम्मितानि पदा मम

अर्थ: इसलिए, हे दैत्यराज, हे वरदाताओं में श्रेष्ठ, मैं आपसे केवल थोड़ी-सी भूमि माँगता हूँ — तीन पग लम्बी, मेरे अपने डग से नापी हुई। (स्कन्ध 8, अध्याय 19, श्लोक 16)

उन्होंने कहा कि वे इससे अधिक कुछ नहीं माँगते, क्योंकि जो विद्वान केवल उतना ही स्वीकार करता है जितनी उसे वास्तव में आवश्यकता है, वह कोई दोष नहीं करता।

नान्यत् ते कामये राजन्वदान्याज्जगदीश्वरात् ।

नैनः प्राप्नोति वै विद्वान्यावदर्थप्रतिग्रहः ॥ १७ ॥

नान्यत् ते कामये राजन्वदान्याज्जगदीश्वरात् नैनः प्राप्नोति वै विद्वान्यावदर्थप्रतिग्रहः

अर्थ: हे राजन, जगत के उदार स्वामी, मैं आपसे और कुछ नहीं चाहता; क्योंकि जो बुद्धिमान केवल उतना ही स्वीकार करता है जितनी उसे आवश्यकता है, वह कभी पाप नहीं करता। (स्कन्ध 8, अध्याय 19, श्लोक 17)

बली का उदार आग्रह

बली इस याचना पर मुस्कराए। उन्होंने बालक से कहा कि यद्यपि उसके वचन बुद्धिमानों की दृष्टि में योग्य हैं, वह एक बालक-सी बुद्धि दिखाता है, अपने हित के प्रति अनजान: समस्त लोकों के अविवादित स्वामी को — जो एक पूरा द्वीप देने में समर्थ है — वश में करके भी वह केवल तीन पग भूमि माँगता है। एक बार जब कोई मनुष्य किसी दाता के पास पहुँच जाए, बली ने कहा, तो उसे पुनः माँगना नहीं पड़ना चाहिए; और इसलिए उन्होंने बालक से आग्रह किया कि वह स्वेच्छा से इतनी भूमि स्वीकार कर ले जिससे उसका सम्मानजनक निर्वाह हो सके।

भगवान की सन्तोष पर शिक्षा

भगवान ने बली की उदारता का उत्तर अधिक लेकर नहीं, अपितु सन्तोष के सच्चे स्वरूप पर एक शिक्षा से दिया। तीनों लोकों के समस्त प्रिय कोष, उन्होंने कहा, उस व्यक्ति को तृप्त नहीं कर सकते जिसने अपनी इन्द्रियों और मन को वश में नहीं किया।

त्रिभिः क्रमैरसन्तुष्टो द्वीपेनापि न पूर्यते ।

नववर्षसमेतेन सप्तद्वीपवरेच्छया ॥ २२ ॥

त्रिभिः क्रमैरसन्तुष्टो द्वीपेनापि न पूर्यते नववर्षसमेतेन सप्तद्वीपवरेच्छया

अर्थ: जो तीन पग भूमि से सन्तुष्ट नहीं, वह नौ वर्षों वाले एक सम्पूर्ण द्वीप से भी तृप्त नहीं होगा, क्योंकि वह तो पृथ्वी के सातों द्वीपों की ही लालसा करेगा। (स्कन्ध 8, अध्याय 19, श्लोक 22)

उन्होंने स्मरण कराया कि पृथु और गय जैसे महान सम्राट भी, जो सातों द्वीपों के स्वामी थे, धन और भोग की अपनी तृष्णा का अन्त न पा सके। एक सन्तुष्ट व्यक्ति जो कुछ भाग्य से मिले उसी पर सुखपूर्वक जीता है, जबकि एक असन्तुष्ट व्यक्ति, चाहे तीनों लोक जीत ले, कभी सुखी नहीं होता। धन और भोग से असन्तोष, भगवान ने सिखाया, जीव को जन्म-जन्मान्तर में भटकाता है, जबकि जो स्वयं आ जाए उससे सन्तोष मोक्ष की ओर ले जाता है; एक सन्तुष्ट ब्राह्मण का आध्यात्मिक तेज बढ़ता है, किन्तु लोभ से वह वैसे ही बुझ जाता है जैसे जल से अग्नि। इसी कारण, उन्होंने कहा, उन्होंने केवल तीन पग माँगे — क्योंकि धन केवल अपनी आवश्यकता की मात्रा तक ही वांछनीय है।

बली अपना वचन देते हैं

द्रवित और प्रसन्न होकर, बली ने वह उपहार देने का निश्चय किया।

श्रीशुक उवाच

इत्युक्तः स हसन्नाह वाञ्छातः प्रतिगृह्यताम् ।

वामनाय महीं दातुं जग्राह जलभाजनम् ॥ २८ ॥

श्रीशुक उवाच इत्युक्तः स हसन्नाह वाञ्छातः प्रतिगृह्यताम् वामनाय महीं दातुं जग्राह जलभाजनम्

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा — इस प्रकार कहे जाने पर, बली हँसे और बोले, “जितना चाहो ले लो”; और दिव्य वामन को भूमि देने के लिए, व्रत को दृढ़ करने हेतु उन्होंने अपना जलपात्र उठा लिया। (स्कन्ध 8, अध्याय 19, श्लोक 28)



याचना की लघुता पर हँसते हुए, उदार बली छोटे ब्राह्मण को तीन पग भूमि के अपने संकल्प को दृढ़ करने के लिए अपना पवित्र जलपात्र उठाते हैं (श्लोक 28)।

शुक्राचार्य की चेतावनी

किन्तु बली के गुरु, ऋषि उशना — शुक्राचार्य, विद्वानों में श्रेष्ठ और भगवान विष्णु के प्रयोजन के ज्ञाता — ने तुरन्त संकट को भाँप लिया और अपने शिष्य को चेतावनी दी।

श्रीशुक उवाच

एष वैरोचने साक्षाद् भगवान्विष्णुरव्ययः ।

कश्यपाददितेर्जातो देवानां कार्यसाधकः ॥ ३० ॥

श्रीशुक्र उवाच एष वैरोचने साक्षाद् भगवान्विष्णुरव्ययः कश्यपाददितेर्जातो देवानां कार्यसाधकः

अर्थ: शुक्राचार्य ने कहा — हे विरोचन-पुत्र, यह वामन कोई और नहीं, स्वयं अविनाशी भगवान विष्णु हैं, जो देवताओं का प्रयोजन सिद्ध करने के लिए कश्यप द्वारा अदिति से जन्मे हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 19, श्लोक 30)

शुक्राचार्य ने कहा कि वे बली के वचन का अनुमोदन नहीं कर सकते, क्योंकि राजा आने वाले अनर्थ से अनजान हैं: असुरों पर एक महान विपत्ति आ पड़ी है। ब्रह्मचारी के वेश में अपनी माया से प्रकट होकर, यह हरि बली का सिंहासन, राज्य, सम्पत्ति, वैभव और यश छीन लेंगे, और उन्हें अपने भाई इन्द्र को दे देंगे। विश्व के समान विशाल रूप धारण कर, वे तीनों लोकों को तीन डगों में नाप लेंगे — और तब, शुक्राचार्य ने पूछा, सब कुछ दे देने पर बली अपने प्राण कैसे बचा पाएँगे?

क्रमतो गां पदैकेन द्वितीयेन दिवं विभोः ।

खं च कायेन महता तार्तीयस्य कुतो गतिः ॥ ३४ ॥

क्रमतो गां पदैकेन द्वितीयेन दिवं विभोः खं च कायेन महता तार्तीयस्य कुतो गतिः

अर्थ: एक डग से भगवान पृथ्वी को नापेंगे, दूसरे से स्वर्ग को, और अपने विशाल शरीर से आकाश को — तब, उनके तीसरे डग के लिए कहाँ कोई स्थान रहेगा? (स्कन्ध 8, अध्याय 19, श्लोक 34)

इतना बड़ा वचन पूरा न कर पाने के कारण, शुक्राचार्य ने चेताया, बली को केवल नरक में ही दृढ़ स्थान मिलेगा। बुद्धिमान उस दान की प्रशंसा नहीं करते जो अपने ही निर्वाह की हानि करे, क्योंकि धार्मिक और सत्कर्म केवल उसी के लिए सम्भव हैं जिसके पास जीविका का साधन हो। उन्होंने यह भी सिखाया कि पूर्ण ज्ञान वाला व्यक्ति अपने संचित धन को पाँच भागों में बाँटे — धर्म के लिए, यश के लिए, भोग के लिए, ऐश्वर्य के लिए, और परिवार के भरण-पोषण के लिए — बजाय इसके कि वह सब कुछ एक साथ अर्पित कर दे (श्लोक 37)। फिर उन्होंने बली को सत्य और असत्य पर उपदेश दिया, ऋग्वेद के ऋषियों (बहूचों) का निर्णय उद्धृत करते हुए: जो कुछ याचक की प्रार्थना पर “हाँ” कहकर बोला जाए वह सत्य है, जबकि “नहीं” कहकर की गई अस्वीकृति असत्य है। सत्य, उन्होंने कहा, शरीर रूपी वृक्ष का पुष्प और फल है; किन्तु यदि वृक्ष ही न बचे, तो उसका पुष्प और फल भी नष्ट हो जाते हैं — और इसलिए, विषम परिस्थिति में, एक अस्वीकृति जो अपने प्राणों की रक्षा करे, कभी-कभी क्षम्य हो सकती है। असत्य, शुक्राचार्य ने सिखाया, कुछ थोड़ी-सी परिस्थितियों में दोषयुक्त नहीं है: स्त्री को रिझाने में, हँसी-मज़ाक में, विवाह में, अपने प्राणों की रक्षा में, मृत्यु के संकट में, गौओं और ब्राह्मणों के हित में, और जहाँ किसी दूसरे को हिंसा की आशंका हो। इन वचनों से उन्होंने बली को अपने वचन पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया।



गुरु शुक्राचार्य, दिव्य वामन को स्वयं भगवान विष्णु के रूप में पहचानकर, बली को गम्भीरता से चेताते हैं कि भगवान तीनों लोकों को तीन डगों में नाप लेंगे और उनका वचन उन्हें सब कुछ खो देगा (श्लोक 29-43)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान भक्त के वंश और गुण का सम्मान करते हैं। कुछ भी माँगने से पूर्व, भगवान बली के श्रेष्ठ वंश और दान तथा सत्य की उसकी अखण्ड परम्परा की प्रशंसा करते हैं। कृपा प्रायः एक भक्त हृदय में पहले से विद्यमान भलाई की पहचान से आरम्भ होती है (श्लोक 2-6)।
2. सांसारिक शत्रुता शून्यता में समाप्त होती है। हिरण्यकशिपु द्वारा समस्त विश्व में उन भगवान को खोजने की कथा जो उसके अपने हृदय में छिपे थे, यह दिखाती है कि द्वेष केवल मृत्यु तक टिकता है और, अज्ञान में जड़ जमाए, अन्त में कुछ नहीं पाता (श्लोक 7-13)।
3. भगवान केवल आवश्यकता भर माँगते हैं। समस्त लोकों के स्वामी केवल तीन पग भूमि माँगते हैं, यह दिखाते हुए कि आवश्यकता से अधिक कुछ भी स्वीकार न करना ही सच्चे ज्ञान का चिह्न है (श्लोक 16-17)।
4. सन्तोष ही सच्चा धन है। जो तीन पग से सन्तुष्ट नहीं, वह सम्पूर्ण पृथ्वी से भी सन्तुष्ट नहीं होगा; असन्तोष जीव को जन्म-जन्मान्तर में भटकाता है, जबकि स्वयं आए हुए से सन्तोष मोक्ष की ओर ले जाता है (श्लोक 21-27)।
5. सत्यता जीवन का पुष्प और फल है। एक जल्दबाज़ी में लिए व्रत के विरुद्ध चेताते हुए भी, शुक्राचार्य सत्य को धर्म का सार मानते हैं, और असत्य को केवल विरलतम परिस्थितियों में प्राण, गौओं और ब्राह्मणों की रक्षा के लिए अनुमति देते हैं (श्लोक 38-43)।
6. छीन लेना ही भगवान की कृपा है। शुक्राचार्य चेताते हैं कि यह हरि बली का सिंहासन, धन और यश छीन लेंगे (श्लोक 32-33), और अपने शिष्य की सुरक्षा की चिन्ता करने वाले गुरु को यह विनाश-सा प्रतीत होता है। किन्तु “हरि” नाम का ही अर्थ है वह जो हर लेता है — और वैष्णव परम्परा सिखाती है कि जब भगवान किसी भक्त की सम्पत्ति छीनते हैं, तो वह हानि नहीं अपितु कृपा है, जो आत्मा और भगवान के बीच खड़ी आसक्तियों को दूर करती है। जो शुक्राचार्य को भयभीत करता है, वही बली के लिए किसी भी सांसारिक सिंहासन से बढ़कर एक महिमा का द्वार बन जाता है।

एक भाक्तेमय चिन्तन

भगवान की याचना में एक शान्त महानता है। जो तीनों लोकों के स्वामी हैं, जो शीघ्र ही उन्हें तीन डगों में नाप लेंगे, वे बली के समक्ष एक छोटे बालक रूप में खड़े होकर सबसे छोटी वस्तु माँगते हैं — तीन पग भूमि। वे एक पूरा द्वीप माँग सकते थे, और बली प्रसन्नता से दे देते; इसके बजाय वे लगभग कुछ नहीं माँगते, और फिर, जब बली आग्रह करते हैं, तो वे अपनी याचना नहीं बढ़ाते, अपितु बली की समझ को बढ़ाते हैं, उन्हें सिखाते हुए कि सम्पूर्ण पृथ्वी एक अशान्त हृदय को तृप्त नहीं कर सकती, जबकि एक सन्तुष्ट हृदय के लिए तीन पग पर्याप्त से भी अधिक हैं। भगवान उन्हीं के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जिन्हें वे आशीर्वाद देना चाहते हैं: वे हमसे बाहर से बहुत कम माँगते हैं, किन्तु उस माँगने का उपयोग हमें भीतर की ओर, उस एकमात्र कोष की ओर खींचने में करते हैं जो कभी नहीं चुकता — एक हृदय जो भगवान के दिए हुए से सन्तुष्ट है। बली की महानता यही है कि वे फिर भी अपना वचन देते हैं, हँसते हुए, खुले हाथ, निर्भय; और शुक्राचार्य की चेतावनी भी, जो लौकिक दृष्टि से सत्य है, उस भक्त की सुन्दरता से भारी नहीं पड़ सकती जो अपना राज्य रखने के बजाय भगवान से किया अपना वचन रखना चाहता है। भगवान जो तीन पग माँगते हैं, वे अन्ततः बली का सम्पूर्ण जीवन हैं, जो स्वेच्छा से उनके चरणों में रख दिया गया है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज उस सन्तोष का अभ्यास करें जो भगवान बली को सिखाते हैं। कोई एक वस्तु चुनें जिसकी आप अशान्त होकर कामना करते रहे हैं — कोई सम्पत्ति, मान्यता अथवा सुविधा — और उसे सचेत रूप से नीचे रख दें, यह संकल्प करते हुए कि जो कुछ स्वयं आ जाए उसी पर सुखपूर्वक जीएँगे। जैसे ही आप उसे छोड़ें, उस लालसा को ही भगवान को “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” के शब्दों से अर्पित करें, यह विश्वास करते हुए कि शान्ति में दिए गए तीन पग, चिन्ता में पकड़ी सम्पूर्ण पृथ्वी से अधिक समृद्ध हैं। सन्तोष का एक छोटा कर्म, जैसे बली के लिए हुआ, वैसे ही आपके लिए भी भगवान की कृपा का द्वार बन जाए।

उपसंहार

उन्नीसवाँ अध्याय वामन-कथा का हृदय अपने में समेटे है: तीनों लोकों के स्वामी भगवान केवल तीन पग भूमि माँगते हैं, और उस छोटी-सी याचना में किसी भी राज्य से बड़ी एक शिक्षा छिपी है — कि सन्तोष ही, स्वामित्व नहीं, आत्मा का सच्चा धन है। बली का हँसता हुआ वचन, शुक्राचार्य की विनाश की चेतावनी के बावजूद, यह दिखाता है कि भगवान को दिया गया वचन किसी भी सांसारिक सम्पत्ति से बढ़कर है। भयभीत दृष्टि को जो हानि प्रतीत होती है, वह वस्तुतः भगवान की अपनी कृपा है, जो किसी भी सिंहासन से बढ़कर एक महिमा का मार्ग खोलती है। हम भी सीखें कि थोड़े में सन्तुष्ट रहें, भगवान को दिया वचन निभाएँ, और विश्वास रखें कि जो वे हमसे लेते हैं, वे उसे सौ गुना करके लौटाते हैं।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, उन्नीसवाँ अध्याय, पृष्ठ 812–816।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-19-lord-vamana-begs-three-paces-from-bali-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

